

✓ भूमि लुटिया कुमुरा

श्री कृष्णाय नमः।

श्लोक

दुग्धं निपीतदुग्धं
द्विककयद्विधं घनाघन स्निग्धम् ।
अम्बरमिव तारकितं-
कंचन गोपबालकं वन्दे ॥२॥

सूत्र०—आहे सामानिक श्लोक, ले कराकर गुह मारावन, सर्वलोकहित कारणे,
नमस्क मन्दिरे येकत दुग्धा—कहों, कपट गोरवेले, परम मंगल रूपे, नाना
रसे खेडान कदकहों, नलोबाक प्रम सन्तोष रूपे, जेवन भीवा कयत, ताहे
देखह मुनह, निरन्तरे हरि मोल हरि ।

प्रवेश गीत

राम आशोभारि । दत्तिल ।

प्र०—खेळु गोविन्द जतोबाळु संगे ।
मानसि भाव देखावत हंगे ॥

पद—तुष्टि स्थिति लय कारण जोड । जाकेरि लीला जानत नहि कोड ॥
सोहि महेस्वर गोप कुमारा । शोक तारन हेतु भयो अवतारा ॥
जोहि कृपामय देवक देवा । मुकुति निरामय जाकर सेना ॥
नानन रसे खेले सोहि दास्ताला । कइय गाधय गति बाल गोपाला ॥२॥

सूत्र०—सदनगत, भीकला प्रक दिवसे, जतोबाळ मन्दिर पत्तिण, लीर लभनु सुरि
करिण कहों खावल, सोहि समय जतोपाल देखिले, भये जननिक माण्डणे,
जेथे नवद कय कान्दिले लागल, ताहे देखह मुनह । निरन्तरे हरि मोल ।

श्लोक

नीलं नव नवनीतं
केन च पीतं पयः क्व मे मुरली ।
इति समुदीर्य हृदयं
भूमी बालं नमामि गोपालम् ॥१॥
एवं भूतं भूमी सुदन्तं गोपालं नमामि ।

सूत्र०—सकल नागर-चूड़ामणि, आपुन सतक बोलि, आइ करिण, खीर लवणुक
भाण्ड गढ़ाये, माटि छोटि, जेबे कान्हिते लागल, ताहे देखइ सुनइ, निरन्तर
हरि बोल हरि बोल ।

गीत

राम भटियाल । प्रस्तालि ।

भू०—भूमि लुनिया, कान्हे गोपिनाथ, माण्डिते मावरे ।
चुरि करिया, खीर लवणु, खाया खालि धरे ॥
सूत्र०—देखन कम्बुन सुनिण, जखोदा पुत्र स्नेहे, परम आकुल हुका मुकल ।
यखोदा—हे शाकल, तूहें कि निमित्तो माटि लुटि कम्बुन करइ ?
कृष्ण—हे माई असोदे, ओहि भाण्डक मध्ये लवणु थोपाछिल्लु । ताहेक के निया गेल ?
ओहि भाण्ड मध्ये, धन खीर थोपाछिल्लु । ताहेक के पान कयल ?
पद—केवा निया खाइल मोर ए नव क्वनि ।
एहि बुलि कम्बुमि कान्हे वहुमनि ॥
धन खीर थोपाछिल्लो तारो गेल खाया ।
एहि बुलिया कान्हे कानु भाण्डरि गढ़ाया ॥
कृष्ण—हे गाइ, हामु कि कइअ ? हामार परम सुन्दर बोलि, एथाये थोपाछिल्लो ।
ताहेक के लेवा गेल ? आर हामार हैते कि यल ?
पद—एथाये आचिल बोलि केवा निल तारे ।
एतिनि प्रसाद मोर गेल एके बारे ॥

एहि बुलि गेहि दारिया कान्हे वहुराइ ।

कम्बु माधन गलि बालक कोनार ॥४॥

सूत्र०—ओहि बुलि जगतक ईश्वर श्रीकृष्ण, मावक भाण्डिते, माटि लुटि कम्बुन कय,
रोस करिने रहल । ताहे देखिण जखोदा पुत्रक स्नेहे, नानाविध काकूति
करिण, जेबे सान्त करिते लागल, ताहे देखइ सुनइ । निरन्तर हरिबोल
हरिबोल ।

गीत

रामभी (श्रीगान्धार) पत्तिल ।

भू०—गोपाल सुनरे बाप रोस कर दूर ।

तोमार पावै जलाइ छुँ वापेर ठाकुर ॥

यखोदा—ओहे पुता श्रीकृष्ण, तोहारि पावै लागो, जवन अपरक बालक छुँ,
एहि स्थान हरिक अपस्था देखिये, केने मरिण न जाई ? तोहारि ऐचन
अपमान देखिये, हामार इदि सख्य नाहि । ओहे बापु, रोस तेजि ठठइ ।

पद—मानिक जिनिया जले दुखानि मघर ।

रोस तुल भरे आलि मेगेल मानर ॥

कान्हिते कान्हिते पुता अबि पाइला वुल ।

मेखनले मलिन सुन्दर बामद मुल ॥

हाते पाडे गेल बालि सकल तोहारे ।

यमुनारे गेलो हामु नीर आनि बारे ॥

तोमार कय नन्द घोल तजौं नाहि बारे ।

लेखने लवणु खाइले सकले बानरे ॥

यखोदा—हे पुता, तोहारि धानरे सकल लवणु खाकल । तोहो हानाथ रोस करिण
माटि छोटि जेबे कम्बुन करसि । ओहि मानिक पुतलि सरीर, धूरि
भूसरित मेला । इहा देखि हामार मने कइ दुल लागु । बाप कम्बु
छोइइ ।

पद—हुज्जेन यानरे दिक्क आपुनि आसंग ।
 ते लाइलो लवतु लाजि मोरे केन संग ॥
 लाइलो लाइलो मारिको वानरा पाइले लग ।
 एखन कातर करो तेन रोस राग ॥
 तोमार यानरे लाइलो मोरे किवा धादि ।
 हामाक रोसे बागर गावे लागे माटि ॥
 भानिक पुत्तुलि तनु धुलये भूकर ।
 काण्डिते भायिक गला मेनेल विकल ॥

सूत्र०—ओहि बुलि धुला भादि बुलि, कोले करिण, नतोदा जे बोल्ल ता सुनइ ।
 पद्योदा—आहे पुता, हामार भन्दिरे, रधि दुग्ध लवतु, सम्पूर्ण, कोन वस्तु नाहि ।
 तोहो जत लाइते वारइ, हामु ताहेक देवच । तोहो रोग तुल छोइइ ।

कृष्ण—हे माइ, हामु धुपाये पीडित हवालि । हामाक लवतु देइ ।

पद्योदा—आहे पुता, एखने गोवाल सवे तुभ आनय । ताहेक हामु मथिये । नवीन
 लवतु देवच । चिनि करपुर माखिण, खीरेर लाचू देवच तुहु ताहेक भोजन
 करिषि । जदि तोहो हामार नचने संजात नाहि जावत, तब पदाक लोक
 साखि करइ ।

पद—एखने भानिजो तुभ मथिजो आपुनि ।
 जत पार लाइवा दिवो ए नव लवनि ॥
 खिरेर लाइ साजि दिन चिनि कपूर माखि ।
 संजात नकावा पक्षर लोक कर साखि ॥
 ए बोल मुनिवा हरि एडिल रोइत ।
 धुला भादि कोले करि मावे दिक्क तन ॥
 तन पान करि हासि तोले नारायण ।
 कहव माधव गति नन्दे नन्दन ॥५॥

सूत्र०—ओहि बुलि असोवा, कृष्णक कोले तुलियर, तनयान कराइते लागल । श्रीकृष्ण
 असोवाक कोले, नेचन माव परकाव कयल, ता देखइ, निरन्तरे हरिबोल ।

गीत

राग स्वाम परिवाल ।

सूत्र०—बलोवा गोपाल कोले छिने ।

प्रथम भरिदे वन जुम्भन दिजे ॥

पद—कवहु भरि हरि चान्द प्रयने ।

पूरल मन पयोधर पाने ॥

कवहु वयने हेरि हरि हारो ।

जगतक जीव असोवा कोले भासे ॥

तनक सनातन जाकइ रोवा ।

तसोवा कोले सोइ सोहि देवा ॥

भक्त अलल हरि दीन दयाल ।

कहव माधव गति बाळ गोपाल ॥६॥

कथा—येचन परकारे श्रीकृष्ण मावक भाण्डिए, लवतु भुझिये, कोले चडि, तनयान
 करिण, परम आनन्दे जेचे लवतु मागल, तां देखइ सुनइ, निरन्तरे हरिबोल ।

गीत

राग श्री । जतिमान ।

सूत्र०—माने लवतु हरि असोवाक आने ।

कर पाति बोलव लवतु मेरि छाने ॥

कृष्ण—आहे माइ असोदे, हामाक तुहु लवतु थिते अंगीकार करइछ । सोहि लवतु
 तोहो हामाक सवरे देइ । आशु लवतु न पाया तोहाक छाइव नाहि ।

तोहो हागाक लवतु लहिण वारग्यार भाण्डियाळ, आशु छाइव नाहि ।

पद—पुत्तुवे बुलिवा आछा लवतु दिवारे ।

सोहि लवतु माव लागव हामारे ॥

लवतु न पाइले माइ न छाडियो तोरे ।

मुनि चाना वारे वारे भाण्डियाळा मोरे ॥

मसोदा—हे मायू श्रीकृष्ण, आहु लवतु एहे नाहि । जान दिवसे देवस ।

सुत०—पुनः श्रीकृष्ण भावक आन्तर परि कइो बोल । आहें माइ जलोदे ।

कृष्ण—आहि माइ असोदे, तोहारि जवने संवात नाहि । एहि देरि हाभाकु लवतु देवस । लवतु न पाया तोदाक, कतिहो चाहिते नाहि देवस ।

पद—मातर आञ्जोरे चरि सोले मारापने ।

लवतु न पाया जानि छाड़िबो कमने ॥

ये आछिल इयंगमि हरि पुचिअरे ।

एकहासे नपाइ माइ दिलो जानि तारे ॥

सुत०—कृष्णक निबन्ध देखिए, हरिक पूजा निमित्त हियंगमि, नवीन नवतु घेयाछिल । ताहेक असोदा कृष्णक देखइ । सोहि लवतु भोजन करिये, श्रीकृष्ण जैचन नृत्य करतु, ता देखइ ।

पद—नवीन लवतु पाया परम भौतुके । चराकर गुरु हरि भुञ्जिला उन्तुके ॥

लवतु भुञ्जिया नासे चित्तगतक पति । कह्य मायब हरिदरेनु गति ॥३॥

सुत०—हे समाजिक लोक, जोहि श्रीकृष्ण सरान्तर वन्दित ब्रह्मा आदि देवता सय सदासे सेवत, महामहा जले ताहेक गुण्ट करिते नाहि पायत, सोहि परमेश्वर, भक्तिक बस्य हवा, गोचारिक ठाने, लवतु मागिए, परम आनन्द मोचन करल । ऐत्यन भक्तिक महिमा, इह जानि कृष्णक मने धरिए, निरन्तर हरिशोल हरि ।

इति श्री भूमि छटिया लवतु मागि खोया, बालक कृष्णक, याचा नाट, सम्पूर्ण देख । श्रीकृष्णक करणे समर्पक ।

पिम्परा-गुचुरा-मुमुरा

माधवदेव कृत

श्री कृष्णाय नमः

दलोक

भक्तभक्त बलातुल्यमिह किं मन्मन्दिराश्रयं
बुद्धं तज्यनीतकुम्भविवरे इत्थं किमर्थव्यस्तः ।
कथं तत्र पिपीलिकापमयने सुताः स्निग्धोषिताः
बाल्यं वत्सगतिं विनेकुमिति संजल्पन् हरिः पशु यः ॥२॥

अपिथ

यदने नमनीतमांघवाहं बन्धने तत्करलातुरीधुरीणम् ।
नयने कुहकाभूनाश्रितो यश्चरणे कोमलताण्डवं कुमारम् ॥२॥

गीत

रात भी गाम्भार । परिताल ।

धृज०—प्र०—मोर घरे के ना तुमि बोल्थ गुवालि ।
बलाहर कनिष्ठ मणि बोले करवालि ॥

गोपी—आहे बालक, हामार मन्दिरे तुहूँ के ?

कृष्ण—हामाक नाहि विनह । हामु बलभक्त कनिष्ठ आह ।

पद—गोपी बोले एथा तुमी आहला कि काळे ।

मोर घर तुमि आहलौ बोले नाराजने ॥

गोपि—आहे, तुहूँ अलादक कनिष्ठ ? आः जातल कि निमित्त एथा आवल भिक् ।

कृष्ण—आहे गोपि, हामु हामार मन्दिर तुमि आवल, वंथ भिक्कुल ।

पद—नामिलो आसिलो तुमि घर न जानिया ।
लवतु कलसे केने आछा हात दिया ॥

गोपी—हे कृष्ण, तुहु नाहि जानि आवल । इहात कोनो दोष नाहि । हमार लवतु
कलसि भितरे, केवन इत्त निवेसिने भिक ।

कृष्ण—आः हामाक बड़ दोष पावल । ओहि विपिलिका सब लवतु नास कयल,
इहाक दूर करिते हात दिया आछि ।

पद—हरि बोले गोवि बड़ दोष पाइलि नाछि ।
पिम्परा गुचाइते लागि हात दिया आछि ॥
गोवि बोले उपकार करि आछ भात ।
किसक बगाइला मोर निहार छनाल ॥

गोपी—हे कानाई, तुहुँ हामाक भल उपकार कयल । आः ओहि निद्राक बाळक कि
निमित्त जगावल ।

कृष्ण—हे गोवारि, ओहि बालक समे धेनु राखल । हामार एक बाळक नाहि पावत ।
तारेक पुछिते ओहि बालक जगावल ।

पद—कानु बोले वस मभि खुनिषा न पाइलो ।
तारे पुछिबारे तोर छवाळ बगाइलो ॥
गोपि बोले सुन अरे टेंगन कनाइ ।
तोहार मुख देखो लवतु संभाइ ॥

गोपी—हे कानाई, तुहुँ बड़ि नागर ! हामाक सब लवतु लाइ, सुन्दा वान कइरछ ।
अब तुहुँ लवतु नाहि लावल, तय कर्तन बोलिते तोहारि वदन हने केउन
सबनुक गन्य बाळक होइ ।

कृष्ण—हे गोचारि, तुहु वडि दाऊन इदय । आपुन जिह्वा राखिते नावारि । आपुन
रहे लवतु लावल । अब भतकर मये, हामाक अपवश देखत । हामार गृहे
लवतु के पुछत ? लाइनाक न पाइ । तोमारि घरे जोरि करि लवतु लावल ?

पद—कानु बोले सुन अरे गोपि निवारनि ।
तोहार मुखत संभ तइसे बुरनि ॥
सुनिषा गोपिनि खुनि न पाइला उत्तर ।
मिछा माति गोपिरे भाइला दामोदर ॥
सकल कलार गुण प्रभु नारायन ।
गोपिरे भौंझिना तुमि ए कुन कलम ॥
कहव माधव हरि सरन तोम्हार ।
मिछा मातिवार प्रभु कमल देवहार ॥३॥

श्लोक—हे रामानिक, श्री कृष्णक पेशन जानि सुनि, गोपि उत्तर नाहि पावल ; परम
सजित होइ पुन श्रीकृष्णक जे बोलल ता सुनइ ।

गोपी—हे कानाई, तोहाक हामु उत्तरे नाहि पावल । आजु तोहारि मायक आगु राव
कया कहिये, हामु तोहाक जे जानु ता करब ।

श्लोक—ओहि बोलि गोपि पढ़ाक गोपिसक डाक दिने, एक धान होइ, सबदि
शिरा, पसोदाक आगु कहल ।

गोपी—हे माइ जसोदे, तोहारि बालक कानाई, हामाक जे जे अपकार करत, ता
सुनइ । हामाक गृहे दधि दुध रहये नाहि । श्रीकृष्ण बालक सहिते नास
कयल ।

अपर गोपी—हे माइ, ओहि कृष्णक कया कत कहन ? हामार संचित लवतु चुरि करि
लाइ । बोरबाक माइ भोगि पेइलावल ।

अपर गोपी—जे माइ, ओहि कानाईक हानु चोर भरल । हामाक भान्जिये, बहुत
उत्तर देखइ । हामाक जे बोलल, से कया कहिते हामारे से जानि
ओहि कानाईक कया कत कहव, श्रीकृष्णक निमित्तो हाडु रहये नावारि ।

पसोदा—हे बालक पादव, ताहो गुवालक पाइ कतिहु जायव नाहि । तोहारि अपवश
हामु कत सबन ? हामु जे कहि ता सुनइ ।

गीत

राम श्री । परितोष ।

प्र०—यादव न जायो न जायो तुमि गुवाछर पाइ ।

कठ ना एहिओ मभि तोम्हार भगवद ॥

पद—येहौ बोलि छुरि करि खाइलो लवनी ।

सब दधि दूध खाइलो बोले केहु जनी ॥

केहु बोले भांगिलो जोखार भेरि भाड ।

एसर बयसे तुमि एतमान चान्द ॥

मोहोर धर दधि मन देय यदि ।

प्रति दिने दिने महाइवाक पारौ नदि ॥

सधापि नोबोझे हरि खाइवाक तोम्हारे ।

छुरि करिचारे जाय परार धरे ॥

नानान मुख करि नानान बाजरे ।

जस्तन करिवा साजु खाइवाक तोम्हारे ॥

बत परमाने खाव घेट भरि भरि ।

तुखिर छवाल जेन फुटा छुरि करि ॥

आर यदि बाव तुमि गुवाछेर कारि ।

हेमने मारिजौ जेन गावे रहे खारि ॥

कह्य माधव माइ गालि पार कारे ।

ओहितो निरस्ता हरि आवमा सचारे ॥५॥

मशोदा—हे पुता, तोहारि बाप नन्द सब गुवाछक राजा । हामु ताहरे पखनि ।

हामाक उदरे जनमि तुहु ऐचन दुर्जन भेलि । हामाक रहे दधि नाहि ?

दूध नाहि ? लवणु नाहि ? सन्देस नाहि ? कौन वस्तु नाहि ? तोहाक हामु

खाइले नाहि देखि ? तुहु कि भोजन नाहि करत ? कांगालक छवाल जेचन

तुहु वेदाव । आबु तोहाक हामु सिखा देवब । गोवाछक पाइवाक जेचन

नाहि जाव ।

गंशि—हे माइ, तुहु काहेक ऐचन गारि देखि । ओहि जगतक आत्मभा, ब्रह्मा
ब्रह्मादि देखता सबो ताहरे आज्ञावादि, परम सादरे ब्रहत, ताहेक तुहु नियम
करिते बाय उचित नहे ।

कृष्ण—हे माइ, तुहु कतिहौ गारि नाहि देवन । तुहु बारम्बार जत अपमान दियाछ
ताहेक हामु सहइछि, अब अचनेक बुलि ता हुनइ ।

गीत

राम भटियालि । एक ताल ।

प्र०—आखो माइ गालि तुमि ना पारिवा मोरे
जत अपमान मोरे, दिया आछ वारे वारे ।
भाले आमि सवा आछौ तारे ॥

पद—कोन छार पुरातन, से करा दुइर बन ।
कलखि भांगिल देखि रामे ।
हैवाक नरेल मोर, जेन पाइले खन्टचोर,
बान्धिला मोहर लेया पाने ॥
एइ अपराध खानि, बसेछा नन्देर रानि,
आदर सहिवा तुमि कि ।
तोम्हार लभन देखि, जगते जानिखो तुमि,
जेन बड़ मानुषर भि ॥
तप अप चरु यरा, ताहि दान पुन्य व्रत,
आछिला अतम आन्दकुलि ।
आमि पुत्र हुआ आमि, से दोष करिलो दुर,
आबे तोम्हार आमाते चाबुरि ॥
आति निदाकनि जानि, दुवाकाळे दुपनिखौ,
बूझ काले पुत्र जेछो एभा ।
सामान्य नारियो जानि, बूझ हथा न जानिला,
आपुन पुत्रर दाया देधा ।

जगत हाकिम धीर, दुर्गम राखिवा भीर,
नकेला आम्हार कोइ काम ।
कल उपकार गुन, सकले हाकिम दिख,
आम्हार समय खोरा नाम ॥
राजार कुमार हुवा गर चारि लाखो भात,
धुर्मम संकट जने - जने
तथापिले आमि भात, नोलाइबाक न पारिलो,
आरो भात बोलाइव कमने ॥
सहिवा थापिले भात, सकले जगते बोले,
उचित बोखिले लागे इन्द ।
जत अपमान दुख, सकले सहिवा थाकि,
तथापि आमि से भेलो मन्द ॥
अपमान सहिवाक, नपारि पलायन जाइयो,
कहेर नगरि मधुपुरि ।
आम्हार नपाय लाग, कान्तिवा परिवा पाछे,
सकल भावना हव चूरि ॥
आहार माहार अन्त, ब्रह्मा हरे नपायल,
हेन हरि चातुरि खेलाइ ।
कह्य माधव प्रभु, आर किलो न बुलिया,
सोहार जनमि दुख पाइ ॥३॥

कृष्ण—हे माइ, तुहु विश्व नाहि बोलव । हामु सोहार जर्जनि (भर्त्सना) सह्य
नाहि । कोन छार पुरातन कल्प मागल, कहा दुइक धन हानि कयल ।
ताहेक गावे नाहि सह्य । आर कि सह्य ? तोहार मान देखि सचलोक
जानल । तुहु जेवन बड मातृपक भि । आ हे माइ, तुहु जगम आन्दुळुरि
रह्य थिक । हामु पुन हुवा से दुख दूर कयल । अब शमाक आगु चातुरि
जानल । आ, कि दाखन हव । आपुन पुत्रक बाधा नाहि जानल ।

जगत हाकिम, समय जेर नपार देलह । आर हामाक करिते कि रहल ? अब
अपमान सहिवाक नपारि पलायन । तोहार भावना खूर करव । हामाक
नपाइ पाछे कान्ति मरव ।

गंगी—हे परमेश्वर, आवर किलो नाहि बोलव । तोहार जर्जनि दुख पाय, तोहार
मापार अन्त ब्रह्मादि देवता सजो नाहि पायल । सामान्यक भि कहव ?
हे परमेश्वर, तोहार अवय चरने, कोटि परनाम करोहो ।

गृध्र—हे सामाजिक, परम ईश्वर श्रीकृष्ण कृपा गुने अवतरि, नाना विनोद कयल ।
इहाक धवन-कीर्तन कलि मुखे संसार तरव । जानि कृष्ण चरने मनधर करि
निरन्तरे हरिबोल हरिबोल ।

पिम्बरा हुवाना कुमुरा समाप्त ।